IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''कोसी कमिश्नरी के स्वतंत्रता सेनानी''

डा0 रत्नेश कुमार

भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा

''कोशी कमिश्नरी के स्वतंत्रता सेनानी'' एक ऐतिहासिक अध्ययन विषय पर शोध क्षेत्रीय इतिहास लेखन के क्षेत्र में एक नया एवं रोचक अध्याय होगा। जिससे न सिर्फ कोसी के इतिहास को नया आयाम मिलेगा अपितु भारतीय इतिहास में नया अध्याय जुड़ेगा। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में इस क्षेत्र के योगदान एवं महत्वता इस शोध कार्य से चलेगा। आधुनिक इतिहास के लेखन में क्षेत्रीय इतिहास के विकास से संपूर्ण इतिहास का निर्माण हो सकता है। इस शोध कार्य में इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए कोशी कमिश्नरी के स्वतंत्रता सेनानी का भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान एवं महत्व को दर्शाया गया है। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन मुख्य रूप से 1857 ई0 से 1945 ई0 तक चला इसी कालक्रम में कोसी कमिश्नरी में आंदोलन का स्वरूप, प्रकृति एवं सक्रियता का अध्ययन इस शोध कार्य में किया गया है। साथ ही साथ इस आंदोलन में भाग लेने वाले आंदोलनकारी के सक्रियता एवं योगदान को विशेष रूप में दर्शाया गया है। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की सफलता क्षेत्रीय आंदोलन की सफलता पर निर्भर करती थी। इस क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानी अपने संघर्ष, समर्पण एवं एकजुटता से भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में इस क्षेत्र में जान फूंक दी इसमें कितने आंदोलनकारी शहीद हो गये'' एवं कितने वर्षों जेल–यात्रा किये परंतु आंदोलन को आँच नहीं आने दिया।

कोशी कमिश्नरी जिसके अंतर्गत सहरसा, सुपौल एवं मधेपुरा जिले आते हैं। 1954 ई0 में सहरसा को जिला बनाया गया, जिसके अंतर्गत सहरसा, सुपौल एवं मधेपुरा सबडिविजन था। कोशी कमिश्नरी का निर्माण हुआ तो पहले सुपौल एवं कालांतर में मधेपुरा सबडिविजन को जिला का दर्जा दिया गया एवं कोशी कमिश्नरी का मुख्यालय सहरसा में बनाया गया। कोशी कमिश्नरी जिसके उत्तर में नेपाल एवं हिमालय (शिवालिक पर्वतमाला) को तराई क्षेत्र, दक्षिण में खगड़िया एवं नवगछिया जिला, पूरब में पूर्णिया एवं अररिया जिला तथा पश्चिम में दरभंगा एवं मधुबनी जिले के क्षेत्र पड़ते हैं। वह क्षेत्र कोसी नदी की बाढ़ की विभिशिकाओं को प्राचीन काल से झेलते आया है। हर वर्ष इस क्षेत्र के नागरिक बाढ़ मार को सहते हैं। कभी बाढ़ से फसल नष्ट हो जाती हैं, तो कभी आवागमन के मार्ग सड़क एवं रेल अवरूद्ध हो जाती है कभी–कभी तो गाँव के गाँव उजर जाते हैं। पशु एवं इनके चारा तो बाढ़ से हर साल नुकसान होते हैं। परंतु इसके बावजूद यहाँ के निवासी सभ्य, सुशील एवं शांत प्रकृति के होते हैं जो स्वभाव से मृदुभाषी होती हैं।

सहरसा कमिश्नरी $26^{0}34$ से $25^{0}30$ डिग्री अक्षांश पर $86^{0}19$ एवं $97^{0}8$ देशांतर पर उत्तरी गोलार्ध में बसा है।[4] इस कमिश्नरी का क्षेत्रफल 2093 वर्ग मील है। सम्पूर्ण कमिश्नरी गंगा से उत्तर एवं हिमालय में दक्षिण मैदान क्षेत्र है। इसकी दक्षिणी क्षेत्र ज्यादा उपजाऊ एवं घनी आबादी वाली है।[5]

कोसी कमिश्नरी के स्वतंत्रता सेनानी

इस कमिश्नरी की सबसे महत्वपूर्ण नदी कोशी है जो हिमालय पर्वतमाला से निकलती है। नेपाल में अवस्थित चतरा नामक स्थान से यह नदी मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है। इसके अलावे तीलजुगा, भूतहीबलान, सुगावे, सोनियर, जंगर बलान, कमला बलान एवं बागमती कोशी से मिलती है। कोशी नदी अपने नटखट स्वभाव एवं खतरनाक कारनामों के कारण 'बिहार की शोक' के नाम से जानी जाती है। इन नदियों के अलावे हिमालय से निकलकर कोशी में मिलने वाली नदियाँ हैं निम्न है– बाती, घीमरा, तलावे, परवान, घुसन, घालसन, लोरन, कटना, घउस, घघड़ी।

मौसम एवं जलवायु –

इस कमिश्नरी में गर्मी का मौसम छोड़कर बाकी समय का जलवायु आद्रता ही रहता है। सिर्फ गर्मी में वातावरण सूखा रहता है।[11] ठंडा अंतिम नवंबर से फरवरी और गर्मी मार्च से मई तक रहता है। बरसात जून से प्रारंभ होकर सितंबर तक रहती है। अक्टूबर महीना में न अधिक गर्मी, न अधिक सर्दी, न अधिक वर्षा। इस माह में मौसम सामान्य रहता है।[12] सबसे अधिक ठंडी जनवरी में सबसे अधिक गर्मी अप्रैल में होता है। गर्मी के दिनों में अधिकतम तापमान 42^{0} से 43^{0} तक चला जाता है।[13] बरसात जून माह से प्रारंभ हो जाता है लेकिन सबसे अधिक वर्षा जुलाई माह में होती है। पूरे साल का ¼ भाग वर्षा इसी महीने में होता है।[14]

सहरसा प्राचीन काल से राजनीतिक सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण रहा है। महाभारत के सभापर्व में पांडवों के विराटपुर आने का संदर्भ मिलता है। यह विराटपुर वर्तमान सहरसा जिला के सोनबर्षा प्रखंड स्थित गाँव विराटपुर है। बौद्ध काल में सहरसा का यह भू–भाग अंगोत्तरप क्षेत्र के अंतर्गत था। बौद्ध कालीन साहित्य में इस बात का पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध है कि अंगोत्तरप क्षेत्र के अंतर्गत आपन–निगम नाम का एक जनपद था, जहाँ भगवान बुद्ध के पावन चरण पड़े थे। यहाँ भगवान बुद्ध ने एक महीना तक रहकर लोगों को उपदेश दिया था। इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म का विशेष रूप से प्रचार–प्रसार हुआ था। इस क्षेत्र में अनेक बौद्ध मठों और बिहारों का निर्माण हुआ था। सहरसा जिला अंतर्गत बुधमा उस काल का एक प्रसिद्ध मठ था। मिठाई जिसका प्राचीन नाम मिठाई था, भी एक प्रसिद्ध मठ था। कोशी की भयानक विनाश लीला में बौद्ध विहार, स्तूप और मठ नष्ट हो गए। बौद्ध संस्कृति का गढ़ होने के कारण यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि बौद्ध साहित्य में उल्लेखित आपननिगम जनपद आज का वर्तमान सहरसा ही था।

भौगोलिक सामाजिक और आर्थिक कारण से भी प्राचीन काल से सहरसा का अपना विशिष्ट महत्त्व रहा है। प्राचीन काल में बंगाल से तिरहुत जाने के पूरब से पश्चिम एक विशाल मार्ग इस होकर गुजरता था। कोशी और गंडक भी गंगा के तट तक पहुँचने का एक शुगम नदी मार्ग था। इन दोनों स्थल और जलमार्ग के होने के कारण सहरसा का यह क्षेत्र सामाजिक और आर्थिक गतिविधि का महत्वपूर्ण केंद्र बना हुआ था। इसलिए प्राचीन काल से ही यह क्षेत्र महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं का केंद्र बना रहा। मौर्य काल में इस क्षेत्र की राजनीतिक आर्थिक और संस्कृतिक में गोरहोघाट में मिली मौर्यकालीन छवि मुद्राएं तथा 1958 में पटुआहा से मिली मुद्राएँ निश्चय ही नंद और मौर्य युग में इस क्षेत्र की राजनीतिक आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधि का प्रमाण प्रस्तुत करती है। इस जिले के सिकलीगढ़ से प्राप्त मौर्य युगीन स्तंभ और स्वर्गीय निसूनलाला

झा द्वारा 1935 में प्राप्त प्रथम शताब्दी ई0 पू0 का ब्राह्मी लिपि का शिलालेख भी इस युग में सहरसा के ऐतिहासिक महत्व को रेखांकित करता है।

महायान बौद्ध संप्रदाय चीन और तिब्बत में फलने–फूलने के बाद तंत्रवाद में परिणत होकर भारत आया। उग्रतारा भगवती की पावन भूमि महिषी (महिष्मति) एक प्रख्यात तंत्रपीठ के रूप में भारत में प्रसिद्ध हुआ। यहीं महान दार्शनिक संत मंडन मिश्र का प्रादुर्भाव हुआ। मिथिला के तंत्रवाद की जननी महिषी की पावन भूमि ही थी। प्राचीन भारत के तीन महान दार्शनिक मंडन, वाचस्पति और उदयनाचार्य सहरसा की कोख में ही उत्पन्न हुए। मंडन ने महिषी में एक महान संस्कृति मठ की स्थापना की, जिसमें देश–विदेश से जिज्ञासू और शोधार्थी अध्ययन के लिए आते थे। उदयनाचार्य जो महान शास्त्रविद थे, का जन्म करियामा (आज का सहरसा जिलान्तर्गत करमा ग्राम) में हुआ था।

गुप्त काल में सहरसा का यह क्षेत्र राजनीतिक और संस्कृतिक हलचल में परिपूर्ण था। गुप्त काल में सहरसा का यह क्षेत्र तीरभुक्ति का एक भू–भाग था। इस काल में संपूर्ण तीरभुक्ति क्षेत्र में पश्चिम से आर्यों का तेजी से आगमन हुआ। भातपथ ब्रह्ममण के एक संदर्भ से ऐसा प्रतीत होता है कि इस काल में यह भू–भाग आर्यीकरण की तीव्र प्रक्रिया से जुड़ा रहा। पाल युग में तीरभुक्ति साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण प्रदेश था। पाल काल में इस क्षेत्र की राजनीतिक और सांस्कृतिक महत्व में और अधिक वृद्धि हुई। 1650 में बनगाँव से प्राप्त पाल भाषक विग्रह पाल के ताम्र लेख से ऐसा प्रतीत होता है कि गौरवगढ़ (आज के बनगाँव से पश्चिम का गोरहोघाट) पाल साम्राज्य की उपराजधानी थी।

पाल राजवंश के पतन के बाद बंगाल में जहाँ एक ओर सेन राजवंश की स्थापना हुई वहीं दूसरी ओर मिथिला मे कर्नाट राजवंश की स्थापना हुई। ऐसा प्रतीत होता है कि सामरिक और आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण सहरसा के इस प्रदेश पर अधिकार करने के लिए बंगाल के सेन राजवंश और मिथिला के कर्नाट राजवंश के बीच रक्त रंजित संघर्ष हुए। जब बंगाल के सेनों की भक्ति निर्बल हो गई तो सहरसा के इस क्षेत्र पर कर्नाटों का अधिपत्य स्थापित हो गया। इस काल में सहरसा के इस क्षेत्र में धर्म सुधार और समाज सुधार के आंदोलन प्रारंभ हुए। मिथिला के महान संत इस जिले के परसरमा गाँव में अवतरित लक्ष्मीनाथ गोसाई ने धार्मिक आंदोलन की गति दी। जगतपुर और वनगाँव के सभा गाछी का आयोजन प्रारंभ हुआ जहाँ बिना आडंबर और बिना तिलक–दहेज के वैवाहिक संबंध तय किए जाते थे। कर्नाट राजवंश और ओइनबार राजवंश के शासनकाल में ही सहरसा के इस क्षेत्र में गनवरिया राजपूतों ने अपनी भक्ति बढ़ा ली। हरि सिंह देव, मिथिला के राजा थे जिनकी राजधानी कन्दाहा में थी। 500 वर्ष उन्होंने कन्दाहा में सूर्य मंदिर की स्थापना की थी। ओइनबार राज वंश के पतन के बाद गणवरिया राजपूतों ने इस क्षेत्र में शासन का बागडोर अपने हाथ में ले ली।

हिंदू काल के अवसान के बाद मुस्लिम शासन का सुदीर्घ अध्याय प्रारंभ हुआ। तुर्क–अफगान शतायूँ तो इस क्षेत्र में भी स्थापित हुई, इसके बावजूद गणवरिया राजपूतों की भक्ति बनी रही। स्थानीय स्तर पर राजनीति में छाये रहे। उन्होंने तुर्क–अफगान शासन का इस क्षेत्र में उसी तरह विरोध किया जिस तरह बिहार में अफगान सरदारों ने मुगल मुगल सल्तनत का विरोध किया था। सल्तनत की स्थापना के बाद गणवरिया राजपूतों ने असंतुष्ट तुर्क अफगान सरदारों से मिलकर मुगलों के विरूद्ध षड्यंत्र और विद्रोह करना शुरू कर दिया। इस तरह सहरसा का यह क्षेत्र विद्रोह का अखाड़ा बन गया। मुगल सल्तनत की नींव जब चरमरा रही थी उस समय गणवरिया राजपूतों के नेतृत्व में यह क्षेत्र आंतरिक और बाह्य दोनों क्षेत्र में खुदमुख्तार हो गया। गणवारिया राजपूतों ने मुस्लिम शासन के विरुद्ध स्वतंत्रता के दीपक को जलाये रखने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

संदर्भ

1. हिस्ट्री हिस्टोरिकल (आर्कलॉजिकल) स्टडी ऑफ सहरसा थेसिस ऑफ ए0 आई0 एच0 एंड आर्कोलॉजी विभाग विश्वविद्यालय, 2003 डॉ अशोक कुमार सिंह पेज– 01
2. वहीं पेज– 01
3. वही पेज– 02
4. राय चौधरी, पी0 सी0 – बिहार डिस्ट्रिक गैजेटियर सहरसा, वही पेज – 19
5. वही पेज–
6. राय चौधरी पी0 सी0 बिहार डिस्ट्रिकगजेटियर, सहरसा पेज–
7. त्रिपाठी हवलदार – बिहार की नदियों कोशी, पेज– 01– बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी कदम कुआँ, पटना
8. वही पेज
9. वही पेज
10. राय चौधरी पी0 सी0 बिहार डिस्ट्रिकगैजेटियर, सहरसा पेज–
11. वही पेज
12. वही पेज
13. वही पेज